

संपादकीय

(उमेश कुमार तिवारी)

धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना का त्योहार है दशहरा

दशहरा केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय समाज और राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना, शौर्य तथा नवसंकल्प का महापर्व है। यह एक त्योहार नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक एकता और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। भारत में प्रत्येक पर्व केवल धार्मिक आस्था का अवसर नहीं होता, बल्कि वह समाज को नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक विरासत और सामूहिक चेतना से जोड़ने का माध्यम भी बनता है। दशहरा एक महत्वपूर्ण पर्व है जो धर्म की प्रतिष्ठा, संस्कृति की निरंतरता और राष्ट्रीय चेतना के जागरण का संदेश देता है। रावण के पुतले का दहन केवल बाहरी बुराई का अंत नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर छिपे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य जैसी प्रवृत्तियों को त्याग देने का संदेश देता है। दशहरा सांस्कृतिक एकता का प्रतीक माना जाता है क्योंकि पूरे भारत में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है। दशहरा से अधर्म पर धर्म की विजय प्राप्ति का संदेश पूरे राष्ट्र की आध्यात्मिकता एकता का परिचायक है। साथ ही यह पर्व भगवान श्रीराम द्वारा अहंकार और अधर्म के प्रतीक रावण पर विजय का प्रतीक है, जो सिखाता है कि अंततः सत्य की ही जीत होती है। भारतीय चिंतन में धर्म का अर्थ केवल पूजा-पद्धति या धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। धर्म का व्यापक अर्थ है कर्तव्य, न्याय, सत्य, मर्यादा और लोककल्याण। दशहरे का मूल संदेश इसी व्यापक धर्मबोध में निहित है। रामायण की परंपरा के अनुसार, भगवान श्रीराम ने रावण का वध करके अन्याय और अहंकार पर विजय प्राप्त की। इसी प्रकार, देवी दुर्गा द्वारा महिषासुर पर विजय शक्ति, साहस और न्याय की स्थापना का प्रतीक है। यह परंपरा हमें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने तथा निर्बल और पीड़ित लोगों की रक्षा करने की प्रेरणा देती है। इस दृष्टि से दशहरा धर्म की विजय के साथ-साथ मानवीय गरिमा और न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना का भी पर्व है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाने वाला यह त्योहार देवी दुर्गा की शक्ति की उपासना तथा शस्त्र-पूजन (आयुध पूजा) का पावन अवसर होता है। दशहरा भारतीय संस्कृति की समृद्धि, विविधता और जीवंतता का परिचायक है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यह पर्व अलग-अलग परंपराओं और उत्सवों के माध्यम से मनाया जाता है। उत्तर भारत में रामलीला और रावण-दहन इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। पश्चिम बंगाल और पूर्वी भारत के अनेक क्षेत्रों में दुर्गापूजा के समापन के साथ विजयादशमी का विशेष महत्व है। मैसूर का दशहरा अपनी भव्य सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है, जबकि अनेक स्थानों पर शस्त्र-पूजन और आयुध-पूजन की परंपरा भी प्रचलित है। दशहरा हमारी लोककलाओं, संगीत, नाटक, शिल्प और सामुदायिक परंपराओं को भी जीवित रखता है। रामलीला के मंचन से नई पीढ़ी को भारतीय महाकाव्यों, आदर्श चरित्रों और नैतिक शिक्षाओं से परिचित होने का अवसर मिलता है। इस प्रकार यह पर्व अतीत की विरासत को वर्तमान से जोड़ते हुए भविष्य की पीढ़ियों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण माध्यम बनता है। रावण के पुतले का दहन केवल बाहरी बुराई का अंत नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर छिपे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य जैसी प्रवृत्तियों को त्यागने का संदेश देता है। राष्ट्रीय चेतना केवल राष्ट्र के प्रति भावनात्मक लगाव का नाम नहीं है। इसमें देश की सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान, संविधान के मूल्यों के प्रति निष्ठा, नागरिक कर्तव्यों का निर्वहन और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना भी शामिल है। दशहरा इन मूल्यों को सुदृढ़ करने की प्रेरणा देता है। भारत की राष्ट्रीय एकता उसकी विविध भाषाओं, धर्मों, परंपराओं और जीवन-पद्धतियों के बीच पारस्परिक सम्मान पर आधारित है। दशहरा इस सांस्कृतिक विविधता के भीतर विद्यमान साझा नैतिक मूल्यों को रेखांकित करता है। सत्य, न्याय, साहस, करुणा और लोककल्याण जैसे आदर्श किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समूची मानवता के लिए प्रासंगिक हैं। राष्ट्रीय चेतना का वास्तविक अर्थ यह भी है कि नागरिक अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को समझें। देश के प्रति निष्ठा केवल नारों और उत्सवों तक सीमित न रहे, बल्कि ईमानदारी, अनुशासन, सामाजिक सहयोग और सार्वजनिक संपत्ति के संरक्षण जैसे व्यवहारों में दिखाई दे। यदि दशहरे के अवसर पर हम इन संकल्पों को अपने जीवन में अपनाते हैं, तो यह पर्व राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है दशहरा

भारतीय परंपरा में राष्ट्र को केवल भौगोलिक सीमाओं से परिभाषित नहीं किया गया है; उसके साथ भूमि, जनसमुदाय, संस्कृति, इतिहास और साझा जीवन-मूल्यों का गहरा संबंध है। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की दृष्टि से राष्ट्रध्म का आधार केवल राजनीतिक या भौतिक उपलब्धियां नहीं, बल्कि नैतिकता, आत्मानुशासन, सेवा और व्यापक मानवीय कल्याण भी है। भारत में यह पर्व खरीफ की फसलों के आने और कृषि समृद्धि का भी प्रतीक है। ऐतिहासिक रूप से इसी दिन से राजा-महाराजा और योद्धा अपने नए अभियानों की शुरुआत करते थे। रावण-दहन की परंपरा तभी सार्थक होगी, जब हम अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या और अन्यायपूर्ण प्रवृत्तियों को पहचानने का प्रयास करेंगे। केवल पुतले जलाने से सामाजिक बुराइयों का अंत नहीं हो सकता। इसके लिए शिक्षा, नैतिक जागरूकता, सामाजिक सहभागिता और कानून के प्रति सम्मान आवश्यक हैं। निष्कर्षतः दशहरा धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना का ऐसा महापर्व है, जो भारतीय जीवन-दृष्टि के अनेक महत्वपूर्ण आदर्शों को एक सूत्र में पिरोता है। यह धर्म के माध्यम से कर्तव्य और न्याय का बोध कराता है, संस्कृति के माध्यम से हमारी ऐतिहासिक एवं सामूहिक स्मृति को सुरक्षित रखता है ।

फ्रांस और इटली में जो हुआ वो भारत में नहीं हो, इसके लिए मोदी-शाह ने क्या पहले से कोई तैयारी कर रखी है



अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फ्रांस में हिंसा और लूटपाट की घटनाओं के बाद टरुथ सोशल पर जो टिप्पणी की है, उसने पूरी दुनिया में एक नई बहस छेड़ दी है। ट्रंप ने लिखा, फ्रांस जल रहा है! और चेतावनी दी है कि अलग दुनिया से आए लोगों के आव्रजन ने कभी महान रहे देश को संकट में डाल दिया है। उन्होंने फ्रांस से अपनी सीमाएं बंद करने और बहुत देर होने से पहले हालात पर नियंत्रण हासिल करने की अपील की है। ट्रंप की यह टिप्पणी भले ही राजनीतिक रूप से कठोर हो, लेकिन इसके पीछे उठ रहा बुनियादी सवाल बेहद महत्वपूर्ण है कि आखिर किसी राष्ट्र की सीमाओं, सुरक्षा और कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी किसकी है? और जब सरकारें इन चुनौतियों से निपटने में विफल होती हैं, तो उसकी कीमत कौन चुकता है फ्रांस में 17 अक्टूबर को हुए प्रदर्शनों के दौरान जो तस्वीरें सामने आईं, वे किसी भी राष्ट्र के लिए चिंताजनक हैं। महंगाई, शिक्षा व्यवस्था और सार्वजनिक सेवाओं से जुड़ी शिकायतों को लेकर सड़कों पर उतरे हजारों लोगों के बीच हिंसक समूहों ने दुकानों में लूटपाट की, वाहनों में आग लगाई और सरकारी इमारतों को निशाना बनाया। लिमोज शहर का ऐतिहासिक टाउन हॉल आगजनी में बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। पेरिस, मार्सेई और लियोन में भी हिंसा और तोड़फोड़ की घटनाएं सामने आईं। फ्रांसीसी अधिकारियों ने कट्टरपंथी वामपंथी समूहों और उपद्रवियों को हिंसा के लिए जिम्मेदार ठहराया। फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने राष्ट्र के नाम संबोधन में इस हिंसा पर

कार्रवाई करे। सरकार की लोकप्रियता और उसकी नीतियों पर सवाल उठ सकते हैं, लेकिन देश की कानून-व्यवस्था की बंधक नहीं बनाया जा सकता। दूसरी ओर, यूरोप की यह बेचैनी अब केवल फ्रांस तक सीमित नहीं है। इटली में भी 17 और 18 अक्टूबर को महंगाई, कम वेतन और सार्वजनिक सेवाओं की स्थिति के विरोध में प्रदर्शन हुए। मिलान में नकाबपोश प्रदर्शनकारियों ने दुकानों के शीशे तोड़े, आगजनी की और पुलिस पर पथर फेंके। पुलिस को आंसू गैस और कमजोरी और लोकतांत्रिक अधिकारों का अर्थ दंड से मुक्ति नहीं है। देखा जाये तो एक बुनियादी बात समझने की जरूरत है। लोकतंत्र में विरोध करना अधिकार है, लेकिन हिंसा करके सरकार को झुकाना, सार्वजनिक संपत्ति नष्ट करना और आम नागरिकों के जीवन को संकट में डालना अधिकार नहीं हो सकता। यदि कोई समूह और राजनीतिक या वैचारिक मांगों के लिए कानून को चुनौती देने लगे, तो सरकार का दायित्व है कि वह निर्णायक

है। इस असंतोष को केवल आव्रजन या किसी एक विचारधारा के खाले में डालना वास्तविक समस्याओं से आंखें मूंदना होगा। लेकिन जब जायज शिकायतों के बीच हिंसक समूह घुस आते हैं और विरोध को लूटपाट में बदल देते हैं, तो आम नागरिकों का नुकसान होता है और लोकतांत्रिक आंदोलन की विश्वसनीयता भी खत्म होने लगती है। फ्रांस और इटली दोनों की घटनाओं से यही सबक मिलता है कि सरकारों को जनता की समस्याओं का समाधान भी करना होगा और अराजकता फैलाने वालों के खिलाफ कठोरता भी दिखानी होगी। भारत के लिए इस पूरे घटनाक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू अवैध घुसपैठ और राष्ट्रीय सुरक्षा है। बांग्लादेश से अवैध घुसपैठ तथा म्यांमार से आए रोहिंग्या समुदाय के लोगों की अनधिकृत मौजूदगी लंबे समय से सुरक्षा और प्रशासन से जुड़े सवाल खड़े करती रही है। भारत जैसे विशाल और संवेदनशील सीमाओं वाले देश के लिए यह कोई मामूली विषय नहीं है। सीमा पार से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की पहचान, नागरिकता और कानूनी स्थिति का सत्यापन होना चाहिए। जहां अवैध प्रवेश प्रमाणित हो, वहां कानून के अनुसार कार्रवाई होनी चाहिए। यदि किसी व्यक्ति के खिलाफ अपराध या सुरक्षा संबंधी गतिविधियों के टोस प्रमाण हों, तो जांच और अभियोजन में कोई ढिलाई नहीं होनी चाहिए। वैसे ट्रंप आज दुनिया को सीमाओं की सुरक्षा और अवैध घुसपैठ पर सख्ती का जो संदेश दे रहे हैं, उसे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बहुत पहले ही भांप लिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह इस चुनौती से निपटने के लिए पहले से ही कदम उठा रहे हैं। मोदी सरकार ने अवैध घुसपैठ और उससे जुड़े जनसांख्यिकीय बदलावों की पड़ताल के लिए उच्चस्तरीय समिति गठित की है, जिसकी अध्यक्षता सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति प्रकाश प्रभाकर नाओलेकर कर रहे हैं। गृह मंत्रालय ने 26 मई 2026 को इस समिति का गठन किया और 14 अक्टूबर को इसका आधिकारिक पोर्टल demography.mha.gov.in शुरू किया गया। इस पोर्टल के माध्यम से केंद्र और राज्य सरकारें, संस्थाएं तथा आम नागरिक जनसांख्यिकीय बदलावों, असामान्य बसावट और अवैध घुसपैठ से संबंधित जानकारी दे सकते हैं। समिति का उद्देश्य अवैध प्रवासियों की पहचान, हिरासत और निर्वासन के लिए कानूनी, निष्पक्ष और समयबद्ध व्यवस्था की सिफारिश करना भी है। इसके अलावा, अमित तनकाड़ी को सीमा सुरक्षा व्यवस्था से जोड़ा जा रहा है। जुलाई 2026 में सिलीगुड़ी के झुमागाछ स्थित सीमा चौकी पर अमित शाह ने फेसिंग में संध का पता लगाने वाली प्रणाली और दुर्गम इलाकों में घुसपैठ की चेतावनी देने वाली तकनीक को निरीक्षण भी किया था। सरकार का लक्ष्य केवल सीमा पार से होने वाली घुसपैठ रोकना नहीं, बल्कि देश के भीतर मौजूद अवैध प्रवासियों की पहचान और उनके मामलों का कानूनी निपटारा करना भी है।

भोजन की बर्बादी से निपटने की वैश्विक चुनौती

भोजन मूलभूत आवश्यकताओं के अलावा, प्रत्येक इंसान का बुनियादी अधिकार भी है। भोजन अनमोल है जिसका सम्मान करना सभी का कर्तव्य है। आज ‘विश्व खाद्य दिवस’ है जो सालाना 16 अक्टूबर को पूरे संसार में इस मकसद से मनाया जाता है कि अन्न की बर्बादी को रोकने के लिए जमानास को जागरूक किया जाए। नवंबर 1979 को संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के 20वें सम्मेलन में खाद्य दिवस को मनाने का निर्णय हुआ जिसका पहली बार आयोजन वर्ष 1981 में हुआ। दुनिया में भूख से बढ़ते कुपोषण पर नियंत्रण को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक संघों को चेताया था। ये दिवस इस बात पर ज्यादा जोर देता है कि हमें थाली में उतना ही भोजन परोसना चाहिए, जितने की पेट को जरूरत हो। ज्यादा भोजन लेंगे तो निश्चित रूप से बर्बाद ही होगा। फूड इंडेक्स पर यूपएनईपी-2024 की रिपोर्ट के मुताबिक हिंदुस्तान में सालाना करीब 7.8 करोड़ टन भोजन बर्बाद होता है, जिसका औसत लगभग 21.4 करोड़ किलोग्राम प्रतिदिन आका गया। विश्व खाद्य दिवस-2025 की थीम थी ‘बेहतर भोजन और बेहतर भविष्य साथ-साथ’ जो एग्रीफूड सिस्टम को बदलने में वैश्विक सहयोग की शक्ति को उजागर करती है। भोजन बर्बादी की समस्या संसार में बड़ी आफत के रूप में उभरी है। ऐसे तमाम मुल्क हैं जहां अन्न का उत्पादन शून्य है और दूसरे देशों के उत्पाद-भोजन पर ही



निर्भर हैं, बावजूद इसके बेहताशा भोजन बर्बाद करते हैं। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण की ‘फूडवेस्टाइज इंडेक्स रिपोर्ट-2026’ सामने आई जिसमें दुनिया भर में 1.05 अरब टन भोजन बर्बाद होता बताया गया जिससे नई किस्म की न सिर्फ बीमारियां-वायरस फैले, बल्कि पर्यावरण भी दूषित हुआ। भारत में पिछले 10 वर्षों में अन्न उत्पादन 90 मिलियन मीट्रिक टन पिछले एक दशक से ज्यादा हुआ है। धरती पर मात्र भारत ही एक ऐसा मुल्क है जो करीब 76 देशों को विभिन्न किस्म का अन्न सप्लाई करता है जिसमें चीनी, दालें, चावल, मखाने, सरसों और सब्जियां प्रमुख रूप से शामिल हैं। तमाम ऐसे इस्लामिक देश हैं जो भारत में उत्पादित बासमती चावल ही

पसंद करते हैं। ईरान-ईराक में चावल की सप्लाई सिर्फ भारत से ही होती है। अन्न निर्यात के लिहाज से भारत विश्व का बड़ा बाजार बनकर इस समय उभरा है। संसार में भारत दूध और बाजरे की निर्माण में नंबर वन पायदान है। वर्ष 2014 के बाद से हिंदुस्तान शहद, अंडे, मछलियां और फल-सब्जियों के उत्पादन में दूसरे स्थान पर काबिज हुआ है। जबकि, कभी चौथे स्थान पर हुआ करता था। भूखे सोना विकसित संसार के माथे पर कलंक जैसा है। भूख के आंकड़े आज भी डरावने हैं। संसार का एक बड़ा इंसानी हिस्सा अभी भी रात में भूखे पेट सोता है। जबकि, रोजाना जितनी भोजन की बर्बादी होती है, थालियों में खाने को व्यर्थ करके लोग फेंक देते हैं, अगर ऐसा ना किया जाए, तो भूख सोने वालों के आंकड़ों में कमी लाई जा सकती है। भोजन की बर्बादी से न केवल अन्न और धन का नुकसान होता है, बल्कि पानी, बिजली और अन्नदाताओं की सालाना मेहनत भी बेकार होती है। इससे पर्यावरण पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। भूख से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर सभी देशों को चेताना होगा। भूख और अन्न बर्बादी के नियंत्रण पर भारत जैसी पहल अन्य देशों को भी करनी होगी। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 से प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, पीएम पोषण योजना, अंत्योद्य अन्न योजना, राइस फोर्टिफिकेशन और प्राइस रेबिलाइजेशन फंड जैसी प्रमुख पहले भारत की खाद्य और पोषण सुरक्षा

दशहरा: शौर्य, साधना एवं नवसंकल्प का महापर्व

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने जीवन के उत्सवों को केवल आनंद और उल्लास तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें आत्मचिंतन, साधना, संस्कार और जीवन-परिवर्तन का माध्यम बनाया है। यहां प्रत्येक पर्व अपने भीतर कोई न कोई शाश्वत संदेश समेटे हुए है। दशहरा अथवा विजयादशमी ऐसा ही प्रेरणाप्रद पर्व है, जो भारतीय संस्कृति की गहरी जड़ों, आध्यात्मिक परंपराओं और जीवन-दर्शन से जुड़कर मनुष्य को सत्य, साहस, सदाचार और आत्मविजय की राह दिखाता है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि जीवन की वास्तविक विजय दूसरों को पराजित करने में नहीं, बल्कि अपने भीतर विद्यमान दुर्बलताओं, विकारों और नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने में है। असत्य पर सत्य, अधकार पर प्रकाश, निराशा पर आशा और अधर्म पर धर्म की विजय का यह उत्सव भारतीय जनमानस में सदियों से नई ऊर्जा, नया विश्वास और नया संकल्प भरता आया है। दशहरे की सांस्कृतिक चेतना का सबसे प्रभावशाली आधार भगवान श्रीराम की रावण पर विजय है। रामायण का यह प्रसंग केवल एक ऐतिहासिक अथवा पौराणिक युद्ध की परिणति नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और अहंकार के बीच संघर्ष का शाश्वत आख्यान है। श्रीराम मर्यादा, करुणा, सत्य, कर्तव्य और

धर्मनिष्ठा के प्रतीक हैं, जबकि रावण ज्ञान, सामर्थ्य और वैभव से संपन्न होने के बावजूद अहंकार, अनियंत्रित इच्छाओं और अनैतिक आचरण का प्रतीक बन जाता है। रावण का व्यक्तित्व इस सत्य को उजागर करता है कि ज्ञान यदि विवेक से, शक्ति यदि मर्यादा से और समृद्धि यदि नैतिकता से विमुख हो जाए, तो मनुष्य के पतन का कारण बन जाती है। श्रीराम की विजय इसलिए महत्वपूर्ण है कि उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने आदर्शों का परित्याग नहीं किया। दशहरा हमें सिखाता है कि परिस्थितियां कितनी ही कठिन क्यों न हों, सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अंततः समाज की आस्था और इतिहास की प्रेरणा बनता है। भारतीय संस्कृति में दशहरे का संबंध केवल राम की विजय से नहीं, बल्कि मां दुर्गा की महिषासुर पर विजय से भी जुड़ा है। नवरात्र के नौ दिनों में शक्ति की आराधना और दसवें दिन विजयादशमी का उत्सव इस बात का प्रतीक है कि साधना के बाद सिद्धि, संघर्ष के बाद सफलता और आत्मबल के जागरण के बाद विजय का मार्ग प्रशस्त होता है। मां दुर्गा की उपासना हमें यह संदेश देती है कि जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए शक्ति और संवेदना, साहस और विवेक तथा पराक्रम और करुणा का समन्वय आवश्यक है। भारतीय

आध्यात्मिक परंपरा में शक्ति का अर्थ केवल बाहुबल अथवा प्रभुत्व नहीं है, बल्कि आत्मबल, इच्छाशक्ति, धैर्य, आत्मसंयम और अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की नैतिक क्षमता भी है। इसीलिए दशहरा शक्ति की साधना के साथ-साथ उस शक्ति के सद्ुपयोग का भी पर्व है। दशहरा पर्व का आध्यात्मिक पक्ष अत्यंत गहरा है। बाहरी रावण का दहन तभी सार्थक है, जब मनुष्य अपने भीतर बैठे रावण को पहचानने और परास्त करने का साहस जुटाए। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी जैसी प्रवृत्तियां मनुष्य के व्यक्तित्व को भीतर से दुर्बल बनाती हैं। रावण के दस सिरों को इन दस विकारों के प्रतीक के रूप में भी देखा जा सकता है। प्रतिवर्ष रावण के पुतले जलते हैं, आतिशबाजी होती है और उत्सव संपन्न हो जाता है, लेकिन यदि हमारे भीतर ईर्ष्या, छल, स्वार्थ, द्वेष और अहंकार जीवित रहें, तो विजयादशमी का मूल उद्देश्य अधूरा रह जाता है। सच्चा दशहरा वह है, जब हम किसी के प्रति अपने मन में पल रहे द्वेष को समाप्त करें, अपने व्यवहार से छल को निकालें, अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को स्वीकारें और अपनी सफलता में दूसरों के योगदान को भी सम्मान दें। आत्मविजय ही सभी विजयों का आधार है। भारतीय संस्कृति उत्सव को साधना

और साधना को जीवन की श्रेष्ठता से जोड़ती है। विजयादशमी इसी परंपरा का जीवंत उदाहरण है। इस दिन शस्त्रपूजा की जाती है, नए कार्यों का शुभारंभ होता है और विजय की कामना के साथ जीवन में आगे बढ़ने का संकल्प लिया जाता है। शस्त्रपूजा का वास्तविक अर्थ केवल अस्त्रों की आराधना नहीं, बल्कि शक्ति के प्रति श्रद्धा और उसके उत्तरदायी उपयोग का संकल्प है। आज के संदर्भ में हमारे शस्त्र ज्ञान, विवेक, शिक्षा, विज्ञान, श्रम, नैतिकता और सत्यनिष्ठा भी हैं। यदि इन शक्तियों का उपयोग मानवता के कल्याण के लिए किया जाए, तो वे राष्ट्रनिर्माण के प्रभावशाली साधन बन सकती हैं। दशहरा हमें अकर्मण्यता से कर्मशीलता, निराशा से आशा और निष्क्रियता से सृजनशीलता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। यह दिन अपने अधूरे संकल्पों को पूरा करने, नई संभावनाओं के द्वार खोलने और जीवन को श्रेष्ठ दिशा देने का अवसर है। दशहरे का एक महत्वपूर्ण पक्ष प्रकृति, कृषि और लोकजीवन से उसका संबंध भी है। भारतीय समाज में यह पर्व फसल, समृद्धि, ऋतु-परिवर्तन और सामुदायिक उल्लास की परंपराओं से जुड़ा रहा है। शमी वृक्ष की पूजा, उसके पत्तों का आदान-प्रदान और नए कार्यों का शुभारंभ प्रकृति के प्रति श्रद्धा तथा मंगलकामना की भावना को व्यक्त करते हैं।

कृषि प्रधान भारत में फसल की समृद्धि केवल आर्थिक उपलब्धि नहीं, बल्कि धरती, किसान और प्रकृति के परस्पर सहयोग का उत्सव भी है। यह परंपरा हमें याद दिलाती है कि मनुष्य की प्रगति प्रकृति से अलग होकर संभव नहीं है। जिस संस्कृति ने वृक्षों, नदियों, पर्वतों और धरती में पवित्रता का अनुभव किया, उसकी उत्सवधर्मिता में पर्यावरण संरक्षण और सह-अस्तित्व की प्रेरणा भी अंतर्निहित है। आज जब पर्यावरणीय संकट मानवता के सामने गंभीर चुनौती बन रहा है, तब दशहरा हमें प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पुनः समझने का अवसर देता है। विजयादशमी भारतीय संस्कृति की समन्वयकारी चेतना का भी उत्सव है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में इसे विविध रूपों में मनाया जाता है। कहीं रामलीला और रावण-दहन होता है, कहीं दुर्गापूजा के बाद मां की विदाई, कहीं शस्त्रपूजा तो कहीं लोकपरंपराओं के माध्यम से विजय का उल्लास व्यक्त किया जाता है। इन विविधताओं के पीछे एक साझा सांस्कृतिक सूत्र है-सत्य के प्रति आस्था, धर्म के प्रति निष्ठा, शक्ति के प्रति सम्मान और जीवन में मंगल की कामना। आज दशहरे के संदेश को अपने सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में उतारना पहले से अधिक आवश्यक है। भ्रष्टाचार, हिंसा, सामाजिक विद्वेष, अनीतिक

प्रतिस्पर्धा, छलपूर्ण व्यवहार और स्वार्थपरक राजनीति जैसी प्रवृत्तियां समाज की नैतिक शक्ति को कमजोर करती हैं। इन बुराइयों का अंत केवल भाषणों, नारों अथवा प्रतीकात्मक आयोजनों से नहीं हो सकता। इसके लिए व्यक्तिगत चरित्र, सामाजिक उत्तरदायित्व और संस्थागत ईमानदारी को मजबूत करना होगा। यदि हम अपने कार्यक्षेत्र में प्रामाणिकता अपनाएं, सार्वजनिक जीवन में कर्तव्यनिष्ठ रहें, शिक्षा और विकित्सा को मानवीय संवेदना से जोड़ें तथा समाज में प्रेम और सद्भाव को बढ़ावा दें, तो यही दशहरे की वास्तविक साधना होगी। राष्ट्र की शक्ति केवल उसकी आर्थिक समृद्धि, सैन्य क्षमता अथवा तकनीकी उपलब्धियां में नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के चरित्र, नैतिकता, अनुशासन और परस्पर विश्वास में भी निहित होती है। दशहरा अंततः बाहरी विजय से अधिक आंतरिक जागरण का पर्व है। यह हमें अपने भीतर प्रकाश का दीप जलाने, निराशाओं के बीच आशा खोजने, कठिनाइयों में साहस बनाए रखने और जीवन को नवसृजन की दिशा देने का संदेश देता है। आइए, इस विजयादशमी पर हम केवल रावण का पुतला जलाने तक सीमित न रहें, बल्कि अपने भीतर के अहंकार, स्वार्थ, असत्य और दुर्बलताओं को समाप्त करने का संकल्प लें।



एक नज़र

दिल्ली में 2000 से ज्यादा इमारतों को एमसीडी ने नोटिस थमाया, 1500 से अधिक पर चला चाबुक

नई दिल्ली। दिल्ली में इमारतों के ढहने की घटनाएं सामने आने के बाद एमसीडी ने सभी जोन में निरीक्षण को बढ़ाया है। बीते एक महीने में एमसीडी ने 2 हजार से अधिक इमारतों को ढांचागत प्रमाणपत्र को लेकर नोटिस जारी किया है। इसमें कई पीजी, कोचिंग सेंटर, पुस्तकालय समेत अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठान शामिल हैं। निगम अधिकारियों के अनुसार निगम के सभी जोन में इमारतों की सुरक्षा को लेकर जांच लगातार की जा रही है। इनमें जो भी इमारतों में अग्नि सुरक्षा की कमी, निगम के भवन निर्माण से जुड़े नियमों, मास्टर प्लान के नियमों का उल्लंघन पाया गया। उनके खिलाफ कार्रवाई कर उन्हें सील कर दिया गया है। डेढ़ से दो महीने के दौरान दो हजार से अधिक इमारतों को चिन्हित किया गया, जिन्हें ढांचागत प्रमाण पत्र को प्राप्त करने व नवीनीकरण को लेकर नोटिस जारी किए गए। इसके अलावा इमारतों का सुरक्षा ऑडिट भी किया जा रहा है। निगमों के उल्लंघन पर बीते डेढ़ महीने के दौरान 1500 से अधिक इमारतों पर कार्रवाई की गई है। दिल्ली में हाल के महीनों में इमारतें ढहने की घटनाओं ने भवनों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है। सितंबर में सत्य निकेतन में पांच मंजिला पीजी इमारत ढहने से सात लोगों की मौत हुई थी। वहीं, अक्टूबर में उत्तर-पूर्वी दिल्ली के न्यू सीमापुरी में पांच मंजिला इमारत गिरने से भी कई लोगों की जान चली गई। इससे पहले जुलाई में रोहिणी सेक्टर-16 में दो निर्माणाधीन इमारतें ढह गई थीं, जिनमें तीन लोगों की मौत हुई थी। इन हादसों ने रिहायशी इमारतों के साथ-साथ पीजी और अन्य भवनों की संरचनात्मक सुरक्षा की जांच की जरूरत को रेखांकित किया है। इन घटनाओं के बाद दिल्ली नगर निगम ने सभी जोन में इमारतों का निरीक्षण तेज कर दिया है। निगम अधिकारियों के मुताबिक, बीते डेढ़ से दो महीने के दौरान दो हजार से अधिक इमारतों को ढांचागत सुरक्षा प्रमाणपत्र लेने या उसका नवीनीकरण कराने के लिए नोटिस जारी किए गए हैं। इनमें पीजी, कोचिंग सेंटर, पुस्तकालय और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठान शामिल हैं।

रावण के साथ जलेगा कॉकरोच अभिजीत दीपके ने कहा ‘थैंक्यू’, तो एक्स यूजरों ने ले ली मौज

नई दिल्ली। दिल्ली की श्री केशव रामलीला कमेटी रावण के साथ 30 फुट ऊंचा कॉकरोच का पुतला भी जलाने वाली है। सोशल मीडिया पर खबर फैली तो कॉकरोच जनता पार्टी के अभिजीत दीपके ने इसको लेकर थैंक्यू कहा। इसके बाद एक्स यूजरों ने उनकी खिचाई करनी शुरू कर दी। तरह-तरह के कमेंट आने लगे। दिल्ली की श्री केशव रामलीला कमेटी रावण के साथ 30 फुट ऊंचा कॉकरोच का पुतला भी जलाने वाली है।

उत्तर रेलवे

रेल कोच नवीनीकरण, सोनीपत

निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मुख्य कार्याशाला प्रबंधक कार्यालय, रेल कोच नवीनीकरण कारखाना, सोनीपत, उत्तर रेलवे निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा आमंत्रित करते हैं।

1 निविदा संख्या	RCNK-OPN-HCC-LHB-2026
2 कार्य का नाम और कार्य स्थान:	“आरसीएनके /एसएनपी में कार्य के दायरे के अनुसार LHB नौन-एसी कोचों में उच्च क्षमता वाले कपलर एवं फीडर केबलों की व्यवस्था करना।।”
3 अनुमानित लागत	रुपये 73.50,939/- जीएसटी @ 18% सहित
4 बयाना राशि	रु. 1,47,000 /—
5 निविदा फार्म का मूल्य	शून्य
6 कार्य अवधि	अवधि कार्य आरंभ होने से बारह महीने
7 निविदा प्रपत्र जमा करने की तथा खुलने की तिथि व समय	दिनांक 07 / 11 / 2026 खुलने का समय 12:00 बजे।
8 निविदा प्रपत्र डाउनलोड करने के लिए इंटरनेट साइट	उपरोक्त निविदा IREPS साइट पर उपलब्ध है जो कि है www.ireps.gov.in
9 यदि हिन्दी व इंग्लिश के नोटिस में कोई विरोधाभास है, तो इंग्लिश का नोटिस ही मान्य होगा।	

निविदा सं. : RCNK-OPN-HCC-LHB-2026 दिनांक 16.10.2026

3652/2026

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे	
ई-निविदा (इ-प्रोक्युमेंट) के माध्यम से निविदा आमंत्रण	
निम्नलिखित कार्य के लिए वरिष्ठ मंडल अभियंता-II, उत्तर रेलवे, दिल्ली मंडल मे ई-निविदा आमंत्रण।	
NIT - 26	कार्य का नाम: वरिष्ठ मंडल अभियंता-द्वितीय / दिल्ली के क्षेत्रधिकार में वर्ष 2026-27 के लिए ADEN/GZB के अंतर्गत SSE/P.Way/GZB-II सेवशन में ट्रैक के रखरखाव हेतु वार्षिक P.way जोन। कार्य की अनुमानित लागत (रुपये) :- 13999874.46 बयाना राशि (रुपये): 280000.00
NIT - 27	कार्य का नाम: वरिष्ठ मंडल अभियंता-द्वितीय / दिल्ली के क्षेत्रधिकार में वर्ष 2026-27 के लिए ADEN/GZB के अंतर्गत SSE/P.Way/GZB-II सेवशन में ट्रैक रखरखाव हेतु वार्षिक P.way जोन। कार्य की अनुमानित लागत (रुपये) :- 13999969.40 बयाना राशि (रुपये): 280000.00
निविदा खोलने की तिथि और समय	
वेबसाइट विवरण जहां निविदा दस्तावेजों का पूरा विवरण देखा जा सकता है।	17.11.2026 15:00 Hrs. निविदा www.ireps.gov.in वेबसाइट पर उपलब्ध।
• ठेकेदारों को ई-टेंडर प्रणाली में भाग लेने के लिए भारतीय रेलवे ई-प्रोक्योरमेंट सिस्टम IREPS साइट www.ireps.gov.in के अंतर्गत पंजीकृत होना चाहिए। • सभी नियमों और शर्तों के लिए कृपया निविदा दस्तावेज देखें। • मैन्युअल निविदाये स्वीकृत नहीं की जायेगी। • निविदा दस्तावेज और बयाना की लागत केवल नेट बैंकिंग या भुगतान गेटवे के माध्यम स्वीकार्य होगी।	
सं 128-W/280/e Tender Notice/NIT-26&27-26-27-W।I दिनांक : 21.10.26 3663/2026	
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ	

नई दिल्ली। पूर्व IPS अधिकारी और पुडुचेरी की पूर्व उपराज्यपाल किरण बेदी ने टाइगर श्रॉफ मामले को लेकर पुलिस की त्वरित कार्रवाई की जमकर तारीफ की है। उन्होंने कहा कि एक दिन के भीतर तीन सद्विधों की गिरफ्तारी, राज्यों के बीच पुलिस के बीच बढ़ते बेहतर तालमेल का एक उत्साहजनक सबूत है। इस सफलता का श्रेय उन्होंने तकनीक, खुफिया जानकारी, मानवीय जांच और पुलिस बलों के बीच त्वरित तालमेल को देते हुए कहा कि आधुनिक तकनीक की मदद से किसी भी स्थानीय अपराध को एक इंटर स्टेट सर्व ऑपरेशन में बदला जा सकता है। इसके साथ ही उन्होंने पुलिस के बीच आपसी तालमेल को और मजबूत करने की सलाह देते हुए डिजिटल फोरेंसिक का इस्तेमाल करने के लिए कहा,

योगेंद्र यादव ने प्रशांत भूषण की रेजीम चेंज वाली बात को नकारा, कहा- जनता नहीं चाहती ऐसा

नई दिल्ली। कॉंकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के मंच पर कई बार दिख चुके पॉलिटिकल एक्टिविस्ट और स्वराज इंडिया के प्रमुख योगेंद्र यादव अपनेसाथी प्रशांत भूषण की रेजीम चेंज वाली बात से सहमत नहीं हैं। यादव ने प्रशांत भूषण समेत-नेहा बोरा समेत उन तमाम लोगों को आईना दिखा दिया है जो चाहते हैं कि सड़क पर आंदोलन के जरिए देश में सत्ता परिवर्तन हो। कभी आम आदमी पार्टी (आप) के नेता रहे योगेंद्र यादव राजनीतिक विश्लेषण और चुनावी गणित की जटिलताओं को आसानी से समझाने के लिए भी जाने जाते हैं।

उन्होंने कहा है कि किसी आंदोलन के नेता को जनता से बस एक कदम आगे रहकर अगुआई करनी चाहिए और मांगें वहीं होनी चाहिए जिसकी आवाज जनता से आ रही है। हाल ही में वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण ने सीजेपी की एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान एसआईआर और देश के मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ चलाए जा रहे आंदोलन को रेजीम चेंज की लड़ाई बताया था। इसके अलावा सीजेपी के साथ कदम ताल कर रही ऑल इंडिया स्टूडेंट्स असोसिएशन की प्रमुख नेहा बोरा ने भी बांग्लादेश के उस हिंसक जेन जी प्रोटेस्ट को रास्ता दिखाने वाला बताया है जिसके जरिए पड़ोसी मुल्क में तख्तापलट किया गया। भाजपा ने जहां इन नेताओं की बातों को लपक आंदोलन के उद्देश्यों पर सवाल खड़े किए तो सीजेपी प्रमुख अभिजीत दीपके बार-बार सफाई देकर डेमेज कंट्रोल में जुए गए। उन्होंने कहा कि गांधी के रास्ते पर



चलकर उनकी मांग सिर्फ निष्पक्ष चुनाव की है, सत्ता परिवर्तन की नहीं। इस बीच योगेंद्र यादव ने एक यूट्यूब चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा कि नेताओं को अपनी तरफ से इस तरह की मांगें उठाने से बचना चाहिए, जो जनता की आवाज नहीं है। उन्होंने कहा, हम जैसे हार्डकोर

पॉलिटिकल लोगों की राय से दुनिया में परिवर्तन होते तो दो साल पहले हो जाना चाहिए था, एक साल पहले हो जाना चाहिए था। क्यों क्योंकि सड़क पर चलने वाला आम व्यक्ति हमारी राय से उस तरह सहमत नहीं था जो हम होना चाहते हैं। इसलिए मैं बार बार पॉलिटिकल

जेवर एयरपोर्ट को यमुना सिटी से जोड़ने को बनेगी 120 मीटर चौड़ी सड़क, इन सेक्टरों की बल्ले-बल्ले

ग्रेटर नोएडा। यमुना सिटी की 120 मीटर चौड़ी सड़क यहां के करीब 13 सेक्टरों को नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट(जेवर एयरपोर्ट) से जोड़ेगी। इसको पूरा करने के लिए तेजी से भूमि खरीद की जा रही है। वहीं, टुकड़ों में अधूरी पड़ी सड़क का कुछ जगह निर्माण भी जारी है। यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) के अधिकारी ने बताया कि यमुना सिटी में 120 मीटर चौड़ी सड़क सलारपुर अंडरपास से सेक्टर-22ई तक करीब आठ किलोमीटर हिस्से में बनी हुई है, जबकि दो किलोमीटर का हिस्सा वर्तमान में निर्माणाधीन है। साथ ही इसे पांच किलोमीटर और बढ़ाकर एयरपोर्ट के इंटरचेंज के पास फलेदा कट से जोड़ा जाएगा। यह सड़क यमुना एक्सप्रेसवे के दाहिनी तरफ 15.10 किलोमीटर लंबी और 120 मीटर चौड़ी है। यह सड़क पूरी होने के बाद यीडा के सेक्टर-24, 24ए, 25, 22ए, 22बी, 22डी, 22ई, 22एफ, 23ए और 23बी, 23डी, 23ई समेत अन्य सेक्टरों को आपस में जोड़ेगी। इनमें आवासीय, संस्थागत और मिक्स लैंड सभी प्रकार के सेक्टर शामिल हैं। फिलहाल आधी सड़क अधूरी है। हालांकि, प्राधिकरण ने किसानों की सहमति से भूमि खरीद की प्रक्रिया तेज कर दी है। यह पूरी सड़क सलारपुर से फलेदा कट से बनेगी। इसके आगे यमुना और दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे को जोड़ने वाला इंटरचेंज है। इससे जुड़ाव के लिए सड़क पहले से बनी हुई है। इस कनेक्टिविटी से लोगों को एयरपोर्ट पहुंचना में आसानी होगी। यमुना प्राधिकरण क्षेत्र के सेक्टर-24 में पंतजलि का फूड एंड हर्बल पार्क बन रहा है। 120 मीटर चौड़ी सड़क के किनारे कई दूसरे फूड पार्क भी प्रस्तावित हैं।

अनुकंपा आधार पर नियुक्ति से संबंधित मामलों के शीघ्र निपटान हेतु

10 नवंबर 2026 विशेष अदालत

दिल्ली, लखनऊ, मुरादाबाद, फिरोजपुर, अंबाला मंडल, जम्मू एवं उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली के कार्यालय परिसर में 10.11.2026 को सुबह 11:00 बजे आयोजित अदालत द्वारा

मौके पर ही मामलों का निपटान

अनुकंपा आधार पर नियुक्ति से संबंधित अपना अभ्यावेदन दो प्रतियों में अन्य संबंधित दस्तावेज के साथ जिस मंडल से संबंधित है, उस मंडल के वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी या मंडल कार्मिक अधिकारी को और प्रधान कार्यालय के मामलों में उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (HQ-I) को दो प्रतियों में सम्बंधित कागजात के साथ 31.10.2026 तक अवश्य प्रेषित करें।

नोट:— (i) वर्कशॉप तथा अतिरिक्त इकाइयों से सम्बंधित अनुकम्पा के मामलों में संलग्न मंडल को अभ्यावेदन दें।

(ii) पुराने तय मामलों पर विचार नहीं किया जाएगा।

उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (HQ—I), उत्तर रेलवे प्रधान कार्यालय बड़ौदा हाउस, केजी मार्ग, नई दिल्ली — 110001 वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर रेलवे, रेलवे स्टेडियम के पास, मुरादाबाद — 244001 वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर रेलवे, स्टेशन रोड, फिरोजपुर कैंट, फिरोजपुर — 152001 वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर रेलवे, रेल विहार, अंबाला कैंट, अंबाला — 133001	वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर रेलवे, रेलवे स्टेडियम के पास, मुरादाबाद — 244001 वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर रेलवे, स्टेशन रोड, फिरोजपुर कैंट, फिरोजपुर — 152001 वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर रेलवे, रेल विहार, अंबाला कैंट, अंबाला — 133001
---	--



उत्तर रेलवे

आपकी सेवा में सदैव तत्पर

3657/2026

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ



यामी गौतम की 'नई नवेली' का पहला गाना 'भाभी तबाही' रिलीज

यामी गौतम धर अभिनीत फैंटेसी फेमिली एंटरटेनर 'नई नवेली' को लेकर दर्शकों की उत्सुकता बढ़ती जा रही है। फिल्म का पहला गाना 'भाभी तबाही' रिलीज कर दिया गया है। शादी के जश्न की पृष्ठभूमि पर फिल्माया गया यह गाना नई भाभी की मुंह दिखाई की रस्म के जरिए उसके किरदार की पहली झलक पेश करता है। गाने में यामी नए अंदाज में परिवार में एंट्री करती नजर आ

रही हैं। 'भाभी तबाही' को जी.वी. प्रकाश कुमार ने संगीतबद्ध करने के साथ प्रोड्यूस किया है, जबकि इसके बोल वायु ने लिखे हैं और नीति मोहन ने आवाज दी है। गाने में भांगड़ा, रैप, शास्त्रीय संगीत और हिप-हॉप का मेल देखने को मिलता

जी.वी. प्रकाश कुमार ने संगीतबद्ध और प्रोड्यूस किया है।

है। फिल्म के टीजर के बाद जहां नई भाभी के 'दायन' होने को लेकर रहस्य बना हुआ था, वहीं यह गाना कहानी को हल्के-फुल्के और संगीतमय अंदाज में आगे बढ़ाता है। कोरियोग्राफी विजय गांगुली ने की है। फिल्म में यामी के साथ आदिनाथ एम. कोठारे, अनुराग ठाकुर, सुनीता राजवर, मीता वशिष्ठ, आदित्य कुलश्रेष्ठ, सुस्मिता मुखर्जी, सोनल

झा और सुनील सिन्हा समेत कई कलाकार अहम भूमिकाओं में हैं। फिल्म का निर्देशन बालाजी मोहन ने किया है, जबकि आनंद एल. राय और हिमांशु शर्मा इसके निर्माता हैं। कहानी हिमांशु शर्मा और दिव्य निधि शर्मा ने लिखी है। 'नई नवेली' 16 अक्टूबर 2026 को दशहरे से पहले देशभर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

'लव एंड वॉर' से आलिया भट्ट का पहला लुक आउट



बॉलीवुड के दिग्गज निर्देशक संजय लीला भंसाली की आगामी भव्य फिल्म 'लव एंड वॉर' को लेकर फैंस का उत्साह सातवें आसमान पर है। रणबीर कपूर के बहुप्रतीक्षित फर्स्ट लुक पोस्टर के ठीक एक दिन बाद, मेकअप और अभिनेत्री आलिया भट्ट ने फिल्म से उनका पहला लुक जारी कर दिया है। पीरियड ड्रामा पृष्ठभूमि पर बन रही इस फिल्म में आलिया भट्ट एक कैबरे आर्टिस्ट के रूलेमरस और बोल्ड अवतार में नजर आ रही हैं। पोस्टर में आलिया के रिड एक्स और उनका विंटेज स्टाइल सोशल मीडिया पर आते ही छा गया है। 'आग भी, दिलों की जान भी!': पोस्टर शेयर करते हुए आलिया भट्ट ने लिखा, 'आग भी, दिलों की जान भी!' इसके साथ ही उन्होंने फिल्म की स्टारकास्ट—रणबीर कपूर, विक्की कौशल और भंसाली प्रोडक्शंस को टैग किया। इंस्टाग्राम पर पोस्टर पोस्ट करते हुए आलिया ने कैप्शन में एक लाल गुलाब की इमोजी के साथ 'रीयूनाइटेड' लिखा। उल्लेखनीय है कि 'लाल गुलाब' का भंसाली और आलिया के सिनेमाई सफर से खास जुड़ाव रहा है। भंसाली की सुपरहिट फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' में भी लाल गुलाब एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में देखने को मिला था। 'लव एंड वॉर' की कास्ट के साथ भंसाली का जुड़ाव: इसके अलावा, 'लव एंड वॉर' न सिर्फ SLB और आलिया के बीच, बल्कि रणबीर कपूर और फिल्ममेकर के बीच भी दूसरी बार साथ काम करने का मौका होगा। जो लोग नहीं जानते, उन्हें बता दें कि RK ने 2004 में 'ब्लैक' के सेट पर असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर काम किया था। बाद में, 2007 में रणबीर ने भंसाली की फ़िल्म 'सांवरिया' से एक्टिंग में डेब्यू किया। यह फ़िल्म बॉक्स ऑफ़िस पर फ़्लॉप रही और इसे न सिर्फ़ शाहरुख़ खान और दीपिका पादुकोण की 'ओम शांति ओम' से टक्कर का सामना करना पड़ा, बल्कि इसी फ़िल्म से सोनम कपूर ने भी बॉलीवुड में डेब्यू किया था।

काम के लिए तरसीं सोनल चौहान



अभिनेत्री सोनल चौहान ने करियर के शुरुआती दिनों को याद करते हुए माना कि फिल्म जन्मत की सफलता के बाद उन्हें और काम तलाशना चाहिए था। उन्होंने बताया कि इंडस्ट्री में पक्षपात के कारण ऑडिशन के बावजूद उनके हाथ से कई प्रोजेक्ट निकल गए। हालांकि, मिर्जापुर द मूवी की टीम द्वारा उन पर भरोसा जताए जाने से वह काफी खुश हैं। 'जन्मत' और 'मिर्जापुर द मूवी' जैसी फिल्मों में नजर आ चुकीं अभिनेत्री सोनल चौहान ने अपने करियर के शुरुआती दौर को याद किया है। साल 2008 में रिलीज हुई 'जन्मत' की सफलता के समय सोनल काफी कम उम्र की थीं। उन्होंने बताया कि उस समय उन्हें फिल्मी दुनिया के काम करने के तरीके और वहां मिलने वाले मौकों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। सोनल के मुताबिक, 'जन्मत' का दर्शकों पर कितना असर पड़ा था, इसका उन्हें उस समय पूरी तरह एहसास नहीं था। अब पीछे मुड़कर देखने पर उन्हें लगता है कि फिल्म की सफलता के बाद उन्हें ज्यादा लोगों से मिलना चाहिए था और लगातार काम की तलाश करनी चाहिए थी। 'जन्मत' की सफलता के बाद की गलती पर बोलीं सोनल सोनल चौहान ने अपने शुरुआती करियर को याद करते हुए कहा कि अगर उन्हें समय में पीछे जाकर कुछ बदलने का मौका मिले तो वह 'जन्मत' की सफलता के बाद की अपनी एक गलती को जरूर सुधारेंगी। उन्होंने बताया कि फिल्म हिट होने के बाद उन्हें लोगों से मिलना चाहिए था, काम के लिए कोशिश करनी चाहिए थी और ज्यादा फिल्मों में काम करना चाहिए था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। ऑडिशन देने के बाद भी नहीं मिला काम: सोनल ने यह भी बताया कि उन्हें कई बार ऑडिशन देने के बाद भी काम नहीं मिला। उन्होंने कहा कि कई बार उन्हें फोन करने बताया जाता था कि वह काम के लिए चुन ली गई हैं और निर्देशक को उनका काम पसंद आया है, लेकिन बाद में किसी वजह से वह प्रोजेक्ट उनके हाथ से निकल जाता था। सोनल ने कहा, "कई बार ऑडिशन देती थी, फोन आता था कि शॉर्टलिस्ट कर लिया गया है, निर्देशक को काम पसंद आ गया है, लेकिन फिर पता नहीं क्या होता था कि वह काम नहीं मिलता था। कई बार लगता था कि कम से कम मौका तो दो खुद को साबित करने का।"

देव आनंद: रोमानी छवि का राजा

देव आनंद को भारतीय सिनेमा का एवरग्रीन सुपरस्टार और रोमानी छवि का राजा माना जाता है। उन्होंने अपने अनोखे अंदाज, खास संवाद अदायगी और झुककर चलने की अदा से दशकों तक दर्शकों के दिलों पर राज किया। उनका जन्म 26 सितंबर 1923 को पंजाब के गुरुदासपुर जिला में हुआ था। देव अपने भाई चेतन आनंद से प्रेरित होकर 1943 में फिल्मों में हिरो बनने की इच्छा लिए मुंबई आए और फिल्मों में काम पाने के लिए संघर्ष करने लगे। लगातार प्रयास करते-करते उन्हें फिल्मों में काम करने का अवसर मिलने लगा। हुआ यूं कि प्रभात स्टुडियो की एक फिल्म के लिए हिरो का ऑडिशन चल रहा था। देव भी अपनी किस्मत आजमाने पहुंच गए तथा 55 प्रत्याशियों में देव का चयन हिरो के लिए हो गया। इस प्रकार उन्होंने अपनी पहली फिल्म 'हम एक हैं' में अभिनय किया। इसमें देव आनंद का काम तो काफी सराहा गया,

26 सितंबर जन्म तिथि पर विशेष

किंतु फिल्म फ्लॉप हो गई। इसके बावजूद उन्हें लगातार काम मिलता गया। कारण था उनका चाकलेटी मासूम चेहरा, चलने का स्टाइल, सिर झुकाकर बात करने का स्टाइल, हवा में लहराते बाल और तेज गति से संवाद बोलना तथा होंठों की मुस्कुराहट उनकी पहचान थी। देव आनंद ने फिल्म 'आगे बढ़ो', 'मोहन' तथा 'हम भी इंसान हैं' में काम किया। परंतु ये फिल्में भी सफल नहीं रही। ऐसे में देव आनंद और उनके निर्माता-निर्देशकों को इंतजार था उनकी एक हिट फिल्म का। यह इंतजार भी खत्म हुआ शाहिद लतीफ द्वारा निर्देशित फिल्म 'जिंदी' के प्रदर्शन के बाद। इस फिल्म की सफलता ने सम्पूर्ण फिल्म इंडस्ट्री में तहलका मचा दिया। इसी फिल्म में स्व. किशोर कुमार ने अपनी प्रथम हिंदी गीत 'मरने की दुआ क्यों मांगू' गया था जो बेहद

ही लोकप्रिय हुआ।

इसके बाद देव आनंद कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने तकरीबन सात दशकों के अपने फिल्मी करियर में अफसर, जाल, टैक्सी ड्राइवर, सुनीम जी, सीआईडी, फन्टूस, नौ दो ग्यारह, पेइंग गेस्ट, हम दोनों, तेरे घर के सामने, गाईड, तीन देवियां, ज्वैल थीफ, जानी मेरा नाम, गैम्बलर, हरे रामा हरे कृष्णा, हीरा पन्ना, जानेमन, देश-परदेश, लव मैरिज, प्रेम पुजारी, महल, शरीफ बदमाश, हाउस नं 44, कालापानी आदि फिल्मों में अभिनय किया, जो दर्शकों को आज भी याद है। अपने बड़े

भाई चेतन आनंद के साथ मिलकर 1949 में देव आनंद ने 'नवकेतन' कंपनी की स्थापना की। जिसके बैनर तले कई फिल्मों का निर्देशन भी किया। इस बैनर से गुरुदत्त, राज खोसला, विजय आनंद तथा अमरजीत जैसे लोकप्रिय निर्देशकों का जन्म हुआ तथा इस बैनर ने सैकड़ों प्रतिभाशाली छोटे-बड़े कलाकार दिए। वह अपने जमाने के सबसे बड़े स्टाइल आइकन थे। उनके मफलर, स्कार्फ, टेढ़ी टोपी और बटन बंद शर्ट के स्टाइल को लाखों युवा कॉपी करते थे।



कोमल रानी के साथ अफेयर की खबरों पर भड़के गोविंदा



खराब करने और परिवार से दूर करने की सोची-समझी योजना बताया। मीडिया से बातचीत में गोविंदा ने कहा कि इसमें किसी की गलती नहीं है और ऐसी चीजें आगे भी देखने को मिल सकती हैं। उन्होंने कहा कि वह हमेशा अपने काम पर ध्यान देते रहे हैं और कोमल के साथ उनका रिश्ता पेशेवर है। अभिनेता के मुताबिक, वह अपनी फिल्म 'रूपा' के लिए प्रार्थना करने लालबागचा राजा पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी वह करिश्मा कपूर और रवीना टंडन के साथ मंदिरों में दर्शन कर चुके हैं और उन फिल्मों के लिए यह अनुभव शुभ रहा था। इसी वजह से लंबे समय बाद फिल्म पर काम शुरू करने के दौरान उन्होंने बप्पा का आशीर्वाद लिया। गोविंदा और कोमल के साथ नजर आने के बाद यह मामला तब और चर्चा में आ गया, जब सुनीता आहूजा को एयरपोर्ट पर पैपराजी से बातचीत करते देखा गया। सुनीता ने कहा, 'जानवरों से प्यार करो, इंसानों से नहीं। इंसान धोखेबाज होते हैं।' इससे पहले भी वह गोविंदा और कोमल की नजदीकियों पर टिप्पणी कर चुकी हैं। वहीं गोविंदा का कहना है कि कम उम्र की अभिनेत्रियों के साथ काम करना फिल्म उद्योग में सामान्य बात है और कुछ लोग सुनीता को भड़काकर उनकी छवि खराब करने की कोशिश कर रहे हैं।

बोले- कुछ लोग सुनीता को भड़काकर उनकी छवि खराब करने की कोशिश कर रहे हैं।

लालबागचा राजा के दर्शन के दौरान अभिनेत्री कोमल रानी स्वर्णकार के साथ नजर आने के बाद अभिनेता गोविंदा ने अपनी निजी जिंदगी को लेकर चल रही चर्चाओं पर प्रतिक्रिया दी है। पत्नी सुनीता आहूजा के अकेले बप्पा के दर्शन करने के कुछ घंटे बाद गोविंदा को कोमल के साथ देखा गया था, जिसके बाद दोनों के रिश्ते को लेकर तरह-तरह की अटकलें लगने लगीं। गोविंदा ने इन चर्चाओं को खारिज करते हुए इसे उनकी छवि

लद्दाख में सुकून खोज रही हैं हिना खान

टीवी की मशहूर अभिनेत्रियों में शामिल हिना खान इन दिनों लद्दाख में छुट्टियों का आनंद ले रही हैं। शहर की भागदौड़ और भीड़-भाड़ से दूर हिना यहां सुकून के पल बिता रही हैं। लद्दाख में उन्होंने साधुओं के बीच बैठकर ध्यान लगाया और आध्यात्मिक शांति महसूस की। इसकी झलक उन्होंने अपने हालिया पोस्ट में दिखाई है। लद्दाख के मठ में ध्यान लगाती दिखीं हिना खान: हिना खान ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम खाते पर लद्दाख का एक वीडियो साझा किया है। इसमें वह एक मठ में साधुओं के बीच बैठकर ध्यान करती नजर आ रही हैं। शांत माहौल में हिना काफी सुकून में दिखाई दे रही हैं। इस वीडियो के साथ हिना ने अपने अनुभव को साझा करते हुए लंबा संदेश भी लिखा। उन्होंने बताया कि उन्होंने सूरज निकलने से पहले अपनी यात्रा शुरू की और सूरज की पहली किरण के साथ थिकसे मठ पहुंचीं। हिना ने लिखा, "कुछ यात्राएं दिन शुरू होने से पहले ही शुरू हो जाती हैं।" उन्होंने आगे बताया कि मठ के मंत्र, माहौल, सुबह की प्रार्थना और ध्यान ने उन्हें खुद को खोजने

की इस यात्रा में उम्मीद से कहीं ज्यादा सुकून दिया। हिना ने यह भी कहा कि ध्यान उन्हें शांति देता है। उन्होंने लिखा, "मैंने कभी बाहर की चीजों को देखकर, तो कभी अपने भीतर झांककर... ईश्वर से जुड़ने के पल ढूँढे हैं।" उनके मुताबिक, दुनिया के साथ-साथ हमारे भीतर भी बहुत कुछ मौजूद है और लद्दाख की यह यात्रा उनकी उस खोज का एक यादगार पड़ाव बन गई। खारदुंग ला पास पर भी पहुंचीं हिना: थिकसे मठ के अलावा हिना खान लद्दाख के खारदुंग ला पास भी पहुंचीं। यह जगह समुद्र तल से 17,582 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। हिना ने यहां का वीडियो भी साझा किया, जिसमें वह बर्फ से ढकी वादियों के बीच इस खूबसूरत पल का आनंद लेती नजर आ रही हैं। वीडियो में हिना इस जगह की खसियत के बारे में भी बता रही हैं। लद्दाख की प्राकृतिक खूबसूरती के बीच उनका यह सफर उनके प्रशंसकों को भी काफी पसंद आ रहा है। कैसर के मुश्किल दौर में भी फैंस से जुड़ी रहीं: हिना खान दो साल पहले स्ट्रेज 3 स्तन कैसर से जूझ रही थीं।

बर्फीली वादियां, साधुओं का साथ और ध्यान...



'हमारी राधा' में बढ़ा रिश्तों में तनाव



अनमोल टीवी के पहले ओरिजिनल शो 'हमारी राधा' में अब तनाव बढ़ चुका है, क्योंकि शनाया (वैदेही नायर) ने गैरी (अक्षय म्हात्रे) को अपने और राधा (सिमरन कौर) में से किसी एक को चुनने के लिए 24 घंटे का समय दिया है। राधा घर में शनाया की मौजूदगी पर सवाल उठाती है, उसे घर छोड़ने के लिए कहती है और शनाया का सामान घर से बाहर फेंक देती है। लेकिन, शनाया पीछे हटने के बजाय गैरी के सामने शर्त रख देती है कि वह 24 घंटे में राधा और उसके बीच किसी एक को चुन ले। इस दबाव के बीच गैरी चुपचाप एक वकील से मिलता है और राधा को तलाक देने के बारे में बात करता है। उसे पता नहीं होता कि सुबोध ने उनकी बातचीत सुन ली है। इस पूरे तनाव का असर गैरी की सेहत पर भी पड़ने लगता है और उसे पैनिक अटैक आ जाता है, जिससे परिवार में परेशानी बढ़ जाती है। राधा उसकी तबीयत को लेकर चिंतित रहती है और उसे जाने से रोकने की कोशिश करती है, लेकिन गैरी शनाया से मिलने और अपने फैसले पर आगे बढ़ने के लिए अड़ा रहता है। वह आखिरकार तलाक के कागज़ ले आता है और शनाया से मिलकर उससे वादा करता है कि वह उसके साथ ही रहेगा। अब जब गैरी ने तलाक का फैसला कर लिया है, तो क्या राधा को सच्चाई का पता चल जाएगा? क्या गैरी सच में राधा के साथ बनाए अपने परिवार को छोड़कर शनाया को चुनेगा?

एफआईसीसीआई फ्रेम्स 2026 में दिखेगा सितारों का जलवा

भारत के मीडिया और मनोरंजन उद्योग से जुड़े दिग्गज 29 और 30 सितंबर को मुंबई के ग्रैंड हयात में आयोजित होने वाले एफआईसीसीआई फ्रेम्स 2026 में एक मंच पर जुटेंगे। सम्मेलन के 26वें संस्करण में अजय देवगन, आयुष्मान खुराना, राजकुमार राव, सिद्धार्थ और रवि किशन समेत कई प्रमुख कलाकार, निर्माता, कारोबारी और नीति-निर्माता हिस्सा लेंगे। सम्मेलन में फिल्म, टेलीविजन, ओटीटी, खेल, गेमिंग, लाइव इवेंट और क्रिएटर इकोनॉमी से जुड़े भविष्य के अवसरों और चुनौतियों पर चर्चा होगी। सम्मेलन का उद्घाटन एफआईसीसीआई अध्यक्ष अनंत गोयनका और एफआईसीसीआई मीडिया एवं मनोरंजन समिति के अध्यक्ष तथा जियोस्टार के मनोरंजन कारोबार के मुख्य कार्यकारी अधिकारी केविन वाज करेंगे। एफआईसीसीआई फ्रेम्स के एंबेसडर आयुष्मान खुराना भी अपने विचार शेयर करेंगे। कार्यक्रम में अजय देवगन, रूपाली गांगुली, सुनीता राजवर, रणवीर बराड़, आशुतोष गोवारिकर, श्रुजित सरकार और रिची मेहता सहित कई प्रमुख नाम शामिल होंगे। 'दृश्यम' फ्रेंचाइजी पर विशेष चर्चा में अजय देवगन के साथ निर्देशक अभिषेक पाठक, निर्माता कुमार मंगत पाठक और आलोक जैन हिस्सा लेंगे। वहीं, भारतीय सिनेमा की अगली पीढ़ी पर होने वाली चर्चा में राजकुमार राव और फिल्मकार दिनेश विजान शामिल होंगे।



एक नज़र

कागिसो रबाडा ने डेल स्टेन का रिकॉर्ड तोड़ा, घर पर सबसे कम गेंदों में झटके 200 विकेट

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कागिसो रबाडा ने बुधवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबले के दौरान एक बड़ी उपलब्धि हासिल की। वह गेंद के लिहाज से घर पर सबसे तेज 200 विकेट लेने वाले अफ्रीकी गेंदबाज बन गए हैं। उन्होंने दिग्गज गेंदबाज डेल स्टेन को पीछे छोड़ा। रबाडा अफ्रीका के लिए घर पर 200 टेस्ट विकेट लेने वाले चौथे गेंदबाज बन गए हैं। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे टेस्ट में दो विकेट लेकर ये कारनामा किया। दक्षिण अफ्रीका ने सेंट जॉर्ज पार्क में खेले जा रहे मुकाबले में पहली पारी 9 विकेट पर 425 रन बनाकर घोषित की, जवाब में ऑस्ट्रेलिया की टीम 99 रन पर ही सिमट गई। तेज गेंदबाज कागिसो रबाडा ने घर पर टेस्ट में 200 विकेट पूरे किए। वह ये उपलब्धि हासिल करने वाले अफ्रीका के चौथे गेंदबाज बन गए हैं। उनसे पहले डेल स्टेन, मखाया एंटिनी और शॉन पोलाक ये कारनामा कर चुके हैं। स्टेन के नाम 261 विकेट, एंटिनी ने 249 और पोलॉक ने 235 विकेट लिए हैं। रबाडा के पास इन दिग्गजों से आगे निकलने का मौका है। दक्षिण अफ्रीका के लिए सबसे कम गेंदों में 200 घरेलू टेस्ट विकेट लेने का रिकॉर्ड कागिसो रबाडा के नाम हो गया है। रबाडा ने सिर्फ 7017 गेंद में 200 विकेट पूरे किए। वहीं डेल स्टेन को 200 विकेट लेने में 7751 गेंदें लगी थी। रबाडा ने 38 मैचों में ये कमाल किया, जबकि स्टेन को यहां तक पहुंचने में 37 मैच लगे थे। रबाडा ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे मुकाबले में पहली पारी में निक मैडिसन और मिचेल स्टार्क को अपना शिकार बनाया। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका की टीम ने बारिश से प्रभावित मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करते हुए खराब शुरुआत की। टीम ने 40 रन के अंदर ही चार विकेट गंवा दिए थे और फिर 110 के स्कोर तक 6 विकेट खो दिए। इसके बाद कप्तान तेम्बा बावुमा और मार्को यानसेन के बीच 185 गेंद में 132 रन की साझेदारी हुई। जिससे अफ्रीका की टीम वापसी करने में सफल रही। इसके बाद बावुमा ने साइमन हार्मर के साथ 277 गेंद में 183 रन जोड़े। अफ्रीका की टीम ने 9 विकेट पर 425 रन बनाकर पारी घोषित की। कप्तान तेम्बा बावुमा ने 334 गेंद में 179 रन की पारी खेली। उन्होंने अपनी पारी में 18 चौके और एक छक्का लगाया। इसके जवाब में ऑस्ट्रेलिया की टीम 99 पर ही ऑल आउट हो गई। ऑस्ट्रेलिया की ओर से स्टीव स्मिथ ने सर्वाधिक 28 रन बनाए।

ईशान किशन के पास कई रिकॉर्ड बनाने का मौका, न्यूजीलैंड सीरीज में पूरे कर सकते हैं 2000 टी20 रन

नई दिल्ली। भारत और न्यूजीलैंड के बीच गुरुवार से पांच मैचों की टी20 सीरीज खेली जाएगी। वेस्टइंडीज के खिलाफ 2–2 से सीरीज बराबर पर रहने के बाद भारतीय टीम एक बार फिर मैदान पर उतरने के लिए तैयार है। हालांकि टीम को तैयारी के लिए ज्यादा समय नहीं मिला है। हालांकि विंडीज सीरीज में दमदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों से अच्छा करने की उम्मीद रहेगी। टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन के पास आगामी न्यूजीलैंड सीरीज में कुछ रिकॉर्ड बनाने का सुनहरा मौका है। ईशान किशन के पास न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के दौरान कुछ रिकॉर्ड अपने नाम करने का मौका है। वह एक कैलेंडर ईयर में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज बन सकते हैं। एक कैलेंडर ईयर में बतौर भारतीय बल्लेबाज सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड सूर्यकुमार यादव के नाम है। उन्होंने 2022 में 1164 टी20 इंटरनेशनल रन बनाए थे। किशन को उनसे आगे निकलने के लिए सिर्फ सात रन चाहिए। ईशआन किशन ने 34 टी20 इंटरनेशनल मैचों में 1158 रन बनाए हैं। उनका औसत 37.35 और स्ट्राइक रेट 172.06 है। उन्होंने एक शतक और सात अर्धशतक लगाए हैं। टेस्ट खेलने वाले देशों की सूची में एक कैलेंडर ईयर में सबसे ज्यादा टी20 इंटरनेशनल रन बनाने का रिकॉर्ड पाकिस्तान को मोहम्मद रिजवान के नाम है। उन्होंने 2021 में 1326 रन बनाए हैं। ईशान किशन उनसे सिर्फ 139 रन दूर हैं। वह भारत के लिए टी20 इंटरनेशनल में 2000 रन पूरे करने वाले सातवें बल्लेबाज भी बन सकते हैं। उसके लिए किशन को 46 रनों की जरूरत है। 66 मैचों में उन्होंने टीम के लिए 1964 रन बनाए हैं। ईशान ने एक शतक और 13 अर्धशतक भी लगाए हैं। ईशान किशन ने इस साल अब तक 49 टी20 मैचों में 1760 रन बनाए हैं। उनका औसत 38.26 रहा है और स्ट्राइक रेट 175 का है। वह एक कैलेंडर ईयर में 2000 टी20 रन बनाने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज बनने के करीब हैं। उनको यहां तक पहुंचने के लिए 240 रन चाहिए। वेस्टइंडीज के निकोलस पूरन और मोहम्मद रिजवान ही ये कारनामा कर पाए हैं। पूरन ने 2024 में 2331 रन और रिजवान ने 2021 में 2036 रन बनाए थे।

शैफाली वर्मा इस हरकत के लिए आईसीसी की रडार पर आई, फटकार के साथ-साथ डिमेरिट अंक भी मिला

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान शैफाली वर्मा को जिम्बाब्वे के खिलाफ दूसरे टी20 मैच में एक कैच छूटने के बाद हताशा में मैदान पर गेंद जमीन पर फेंकने के कारण आधिकारिक तौर पर फटकार लगाई गई। यह घटना जिम्बाब्वे की पारी के 12वें ओवर में घटी। रायपुर में रविवार को भारत की नौ विकेट से जीत के दौरान 22 वर्षीय शैफाली को इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) की आचार संहिता के लेवल एक के उल्लंघन का दोषी पाया गया। उन्हें खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के लिए आईसीसी की आचार संहिता

की धारा 2.2 के उल्लंघन का दोषी पाया गया है जो किसी अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान क्रिकेट के उपकरणों या कपड़ों, मैदान के उपकरणों, या साजो सामान के दुरुपयोग से संबंधित है।

आईसीसी की विज्ञप्ति के अनुसार उन पर एक डिमेरिट अंक भी लगाया गया है। सलामी बल्लेबाज शैफाली वर्मा और कप्तान स्मृति मंधाना की पारियों के दम पर भारत ने दूसरे टी20 में जिम्बाब्वे को 8.5 ओवर में हराकर तीन मैच की सीरीज में 2–0 से अजेय बढ़त बना ली। शैफाली और मंधाना ने पहले विकेट के लिए 96 रन की साझेदारी

वसीम जाफर को क्यों नहीं बनाया गया बीसीसीआई चीफ सिलेक्टर आकाश चोपड़ा ने बताए 2 संभावित कारण

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने सोमवार, 19 अक्टूबर को प्रज्ञान ओझा को सीनियर सिलेक्शन कमेटी का अध्यक्ष बनाया है। अजीत अगरकर का 4 अक्टूबर को कार्यकाल समाप्त हुआ था, जिसके बाद प्रज्ञान ओझा को सिलेक्शन कमेटी का अंतरिम अध्यक्ष चुना गया था। उनकी अध्यक्षता में ही चार भारतीय टीमों के सिलेक्शन भी हाल ही में हुए हैं, जिसमें न्यूजीलैंड के खिलाफ टी–20 सीरीज, वनडे सीरीज और टेस्ट सीरीज के लिए टीम में शामिल हैं। साथ ही साथ न्यूजीलैंड टूर के लिए भारत ए की टीम का चयन भी प्रज्ञान ओझा की अध्यक्षता वाली चयन समिति ने किया है। जब प्रज्ञान ओझा अंतरिम अध्यक्ष

बने। हालांकि, अगर रमेश पवार की जगह वसीम जाफर को चुना जाता तब खेल एकदम बदल जाता। वसीम जाफर ने 31 टेस्ट मैच खेले हैं, जो ओझा से ज्यादा हैं और चयन समिति में जाने के बाद उनका चीफ सिलेक्टर बनना तय था। हालांकि, बीसीसीआई ने उन्हें चयनित ना करके प्रज्ञान ओझा के लिए रास्ता साफ किया और वे चीफ सिलेक्टर बने। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की सिलेक्टर्स को चयन करने वाली समिति ने वसीम जाफर प्रज्ञान ओझा ही होंगे, क्योंकि बीसीसीआई पांच सदस्यों की चयन समिति में उसे अध्यक्ष बनाता है, जिसने सबसे ज्यादा टेस्ट मैच खेले हो। इस केस में प्रज्ञान ओझा ने सबसे ज्यादा टेस्ट मैच (24) खेले हैं, इस कारण वे अध्यक्ष या चीफ सिलेक्टर

कॉम्बिनेशन के साथ जाना है, किन खिलाड़ियों को अगले साल होने वाले विश्व कप के लिए चुना जाना है, इस सोच की पहले से स्पष्टता है और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में इसमें शायद बदलाव का पक्षधर नहीं था। यही कारण हो सकता है कि जाफर को नहीं चयनित किया गया। उन्होंने एक और संभावित कारण बताते हुए यह कहा है कि वसीम जाफर के पास सिलेक्शन आदि का अनुभव ना होना भी एक वजह हो सकती है। आकाश चोपड़ा मंगलवार को अपने यूट्यूब चैनल पर कहा- बीसीसीआई अगर चयन समिति में वसीम जाफर को लाती तो 31 टेस्ट मैचों के साथ वे चीफ सिलेक्टर होते। हालांकि, बीसीसीआई ने कहा- नहीं। दो कारण हैं- जो चीजें पहले से सेट हैं, जिस

तरीके से चीजें जा रही हैं, अगले एक साल में विश्व कप है, वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल है, 2028 में टी-20 विश्व कप है तो हम एक दिशा में चल चुके हैं, जिसमें अजीत अगरकर चेयरमैन थे, उनके साथ लगभग अंडरस्टडी आरपी सिंह और प्रज्ञान ओझा रहे, अजय रात्रा भी हैं, शिवसुंदर दास भी हैं, तो इन सबके साथ चलने देते हैं, ज्यादा हिलाना डुलाना नहीं है, हम बड़े टूर्नामेंट के बहुत वलोज हैं, जहां ऑलरेंडो ब्लू प्रिंट सेट हो गया है। हम किसी एक ऐसे व्यक्ति को नहीं लाना चाहते चीफ सिलेक्टर के रूप में जो चीजों को एकदम हिला दे। तो इन चीजों को दरकिनार करने के लिए आप प्रज्ञान ओझा को चेयरमैन बनाना चाहते थे तो वो भी एक सोच रही होगी। कैडिडेट चुनते वक्त ये चीज जरूर दिमाग में रही होगी। तो जो चीजें हैं वो एक तरह से चलती रहें। आकाश चोपड़ा ने दूसरा कारण भी बताया। कहा- रमेश पवार पहले से ही सिस्टम का हिस्सा रहे हैं। ये काम वे लगातार कर रहे हैं तो उनके लिए यह स्वाभाविक सी चीज है। यही बात हम वसीम जाफर के लिए नहीं कह सकते हैं। उन्होंने आवेदन जरूर किया था लेकिन वे सेटअप का हिस्सा पहले से नहीं थे। उन्होंने सीधा अप्लाई किया, जिसका अपना एक मानी है, क्योंकि उन्होंने काफी क्रिकेट खेला है। अप्लाई किया लेकिन उनका चयन नहीं हो पाया। इसके पीछे के यही दो संभावित कारण नजर आते हैं।

भुवनेश्वर कुमार दुनिया के सबसे तेज गेंदबाज नहीं हैं लेकिन, न्यूजीलैंड के जैकब डफी ने बोला खरा सच

नई दिल्ली। अनुभवी तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार की भारतीय टीम में वापसी हो चुकी है। उन्हें हाल ही में बेंगलुरु में वेस्टइंडीज के खिलाफ पांचवें टी20 मैच में भारतीय प्लेइंग इलेवन में शामिल किया गया था। हालांकि, 36 वर्षीय भुवी को बॉलिंग करने का मौका नहीं मिला क्योंकि बारिश के कारण मैच धुल गया। करीब चार साल राष्ट्रीय टीम में लौटे भुवनेश्वर अब न्यूजीलैंड दौरे पर एक्शन में नजर आएंगे। गुरुवार (22 अक्टूबर) से क्राइस्टचर्चवां भारत बनाम न्यूजीलैंड पांच मैचों की टी20 सीरीज का आगाज होने जा रहा है। भुवी ने न्यूजीलैंड में पिछला मैच

नवंबर 2022 में खेला था, जिसके बाद उन्हें लंबे समय तक टीम इंडिया से बाहर रहना पड़ा। भुवी को लेकर न्यूजीलैंड के पेसर जैफ डफी ने बड़ी बात कही है और खरा सच बोला। वह भुवी के साथ आईपीएल 2026 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के लिए खेल चुके हैं। डफी ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फेंस में कहा, मैंने भुवी से काफी कुछ सीखने का प्रयास किया, खासकर स्लोअर गेंदों और यॉर्कर को लेकर। मुझे लगता है कि वह और कगिसो रबाडा पूरे टूर्नामेंट में दो बेस्ट गेंदबाज रहें। आप जानते हैं कि भुवी दुनिया के सबसे तेज गेंदबाज नहीं हैं लेकिन वह बहुत

हुनरमंद हैं। वह गेंद को रिवंग कराते हैं, वह सटीक लेंथ पर गेंदबाजी करते हैं, वह बल्लेबाजों को बहुत अच्छी तरह से पढ़ते हैं और उनके पास जरूरत के मुताबिक अपनी गेंदबाजी में बदलाव करने की क्षमता भी है। भुवनेश्वर ने आईपीएल 2026 में 16 मैचों में 28 विकेट चटकाए। वह 19वें सीजन में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की लिस्ट में दूसरे पायदान पर रहे। उनसे आगे साउथ अफ्रीका के रबाडा थे। धाकड़ पेसर रबाडा ने गुजरात टाइटंस (जीटी) के लिए 17 मैचों में 29 विकेट हासिल किए। डफी को आरसीबी में भुवी के अलावा दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली और इंग्लैंड के

क्रिकेटर फिल सॉल्ट से भी काफी कुछ सीखने का मौका मिला। कीवी पेसर ने कहा, विराट या फिल से रोजाना यह जानना कि वे चीजों को किस तरह देख रहे हैं, उनकी रणनीति क्या है, वे किस तरह की लाइन और लेंथ के बारे में सोचते हैं और उनकी क्या योजनाएं हैं, काफी दिलचस्प रहा। इस तरह की चीजें सीखने का कोई विकल्प नहीं है। इस तरह का अनुभव पैसे देकर भी नहीं खरीदा जा सकता है। डफी आईपीएल में आरसीबी की ओर से फाइनल में भी खेले थे। आरसीबी ने गुजरात टाइटंस को हराकर खिताब जीता था। आरसीबी ने 2025 में आईपीएल ट्रॉफी हासिल की थी।

ऑस्ट्रेलिया की टीम 99 पर हुई ढेर, दक्षिण अफ्रीका ने AUS को 56 साल बाद दिया फॉलोऑन

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका ने सेंट जॉर्ज पार्क में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच में अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। कप्तान तेम्बा बावुमा के दमदार शतक की बदौलत दक्षिण अफ्रीका ने पहली पारी में 9 विकेट पर 425 रन बनाकर घोषित की। अफ्रीका ने ऑस्ट्रेलिया को 99 रन पर आउट करके उसे फॉलोऑन के लिए मजबूर किया। टीम के लिए स्टीव स्मिथ ने सर्वाधिक 28 रन बनाए। 6 बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा नहीं पार सके। ऑस्ट्रेलिया का अफ्रीका के खिलाफ चौथा न्यूनतम पारी का स्कोर है। तेज गेंदबाज मार्को यानसेन ने 5 विकेट लिए। इससे पहले उन्होंने बल्ले से भी कमाल का प्रदर्शन किया था और तेम्बा के साथ मिलकर शतकीय साझेदारी की थी। इसके साथ ही अफ्रीका को 326 रनों की बढ़त मिली। दक्षिण अफ्रीका ने टेस्ट में पांचवी बार ऑस्ट्रेलिया को फॉलोऑन दिया है और दो बार जीत हासिल करने में भी सफल रहा है। 1902 में जोहन्सबर्ग में ऐसा पहली बार हुआ था, जहां मैच ड्रॉ रहा। डरबन में 1967 और 1970 में अफ्रीका ने ऑस्ट्रेलिया को फॉलोऑन दिया था और मैच भी जीता। इसके बाद 56 साल बाद अफ्रीका की टीम ने ऑस्ट्रेलिया को फॉलोऑन के लिए मजबूर किया है। दक्षिण अफ्रीका ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहली पारी के आधार पर तीसरी सबसे बड़ी बढ़त भी हासिल की। अफ्रीका ने पहली पारी 9 विकेट पर 425 रन बनाकर घोषित की इसके जवाब में ऑस्ट्रेलिया की टीम 99 रन ही बना सकी और अफ्रीका को 326 रनों की बढ़त मिली। इससे पहले 2018 में अफ्रीका में जोहन्सबर्ग में 267 रन की बढ़ हासिल की थी। 2009 में केपटाउन में 442 रनों की बढ़त दर्ज की। 1964 में अफ्रीका की टीम ने पहली पारी के आधार पर 250 और 1970 में डरबन में 465 रनों की बढ़त ली थी। ऑस्ट्रेलिया की टीम का दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ये चौथा न्यूनतम स्कोर है। ऑस्ट्रेलिया ने अफ्रीका के खिलाफ 2011 में केपटाउन में सबसे कम 47 रन बनाए थे।